रिकॉर्ड :– आज के इनसान को..... ॐ पिता श्री 29/7/64

ऊँ शांति। मीठे–2 बच्चों को यह तो समझाया गया है कि बहुत पाप आत्माएँ बन गई हैं। अच्छे बच्चे पुकारते भी हैं कि पाप बहुत हो गया है। पाप (से) ही मनुष्य पतित बनते हैं। याद भी करते हैं पापात्माओं को पुण्य आत्मा बनाने लिए पतित–पावन आओ। यह पतित दुनिया है तो ज़रूर कोई पावन दुनिया भी है। निराकारी दुनिया को पावन दुनिया नहीं कहा जाता। वह है शांतिधाम। पतित और पावन दुनिया मनुष्यों के लिए ही है। कलियुगी दुनिया में पतित हैं, सतयुगी दुनिया में पावन हैं। पतित–पावन बाप ही पावन दुनिया स्थापन करेंगे। यह विद्वान–पंडित आदि ने बैठ शास्त्र बनाए हैं। नाम रख दिया है व्यास का। व्याख्यान करने वाले का नाम तो चाहिए ना। मनुष्य तो जानते नहीं, शास्त्र बनाए ही कब। यह तुम बच्चे जानते हो। सतयुग–त्रेता में शास्त्र आदि होते नहीं। भक्तिमार्ग का वहाँ कोई निशान नहीं। भक्तिमार्ग मुर्दाबाद, ज्ञानमार्ग जिंदाबाद होता है। बाबा ज्ञान दे (जिंदा)बाद करते हैं। ज्ञान से 21 जन्म तुम जिंदाबाद हो जाते हो, फिर माया आकर मुर्दाबाद (ब)नाती है। यह है मुर्दों की दुनिया, जिसको कब्रस्थान कहा जाता। इस समय घोर कब्रस्तान कहेंगे। बुद्धि तो सबकी चलती होगी। महाभारी लड़ाई में पूरा कब्रस्तान बनता है। सभी लड़ाइयों में ऐसे (न)हीं होता। गीता भागवत में लगा हुआ है कब्रदाखिल हो जाते हैं। (सभी) ज्ञान सागर के बच्चे हैं।

माया ने काम चिक्षा पर बिठाय सबको भस्मीभूत कर दिया है। सब कब्रदाखिल हैं। मुसलमानों के कुरानों आदि में भी है कि कब्रदाखिल हो जाते हैं। जब कयामत का समय होता है तो उन्हों को जगाने अल्लाह आता है। कब्रस्तान को फिर परिस्तान बनाते हैं। बाबा ने बताया था कि बिरला मंदिर में भी लि(खा) हुआ है– देहली को परिस्तान बनाया था। जो कब्रदाखिल होंगे वह सब खलास हो जावेंगे। प्रलह तो नहीं होती, बाकी मरते बहुत हैं। सतयुग में होते ही थोड़े मनुष्य हैं। एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म रहता है। वहाँ यह ऐसी हालत नहीं होगी जिसका यह गीत सुना। स्वर्ग में कोई किसी को कोई दुख नहीं देता। यहाँ तो कितना दुख देते हैं। एक/दो का खून कर देते हैं। बाबा के पास तो समाचार आते हैं न। कोई दूसरे की स्त्री पर फिदा होते है तो अपनी स्त्री को ज़हर दे खलास कर देते हैं। क्लास में भी आते रहते हैं। खुद लिखते हैं हमने ऐसे–2 किया, दूसरी स्त्री से दिल लगी तो अपनी स्त्री को ज़हर दे दिया। यह है ही पतित दुनिया। भल गाते हैं पतित–पावन आओ; परन्तु अपन को पतित समझते नहीं। कोई को कहो तुम पतित हो तो बिगड़ पड़े। अभी तुम जानते हो कि हम भी पतित थे, बाप पावन बनाए रहे हैं। अब यह फिर दुनिया को बताना है। पतित दुनिया को पावन बनाने वाला एक शिवबाबा ही है, जिसकी जयन्ती भी तुम मनाते हो। वह आ गया है। असल में कायदा था, कोई नई इंवेन्शन निकलती थी तो राजा को बतलाते थे। वह हाथ में उठाते थे। अभी राजा तो है नहीं। यह इंवेन्शन सबको बतलानी है। किसको इतला करे, आपस में मिलकर रेग्युलेशन पास कर हज़ारों की सही लेकर गवर्मेन्ट को सूचना देनी चाहिए। नई इन्वेंशन का फैला(व) करने लिए हाईएस्ट अथॉरिटी को पकड़ा जाता है। फिर वह (प्रबंध) करते हैं। तो तुमको भी ऐसे करना चाहिए जिस–2 का जन्मदिन आए उनके लिए समझाओ। जिस दिन जिसका उत्सव हो उस दिन उसी पर बैठ समझावेंगे तो सब समझेंगे यह तो बरोबर ठीक लगता है। आज से 5000 वर्ष पहले बाप आया था। भारत जो ऊँच ते ऊँच था, सोने की झिड़की थी अब तो बिल्कुल कौड़ी तुल्य बन गए हैं। उनको फिर प०पि०प० शिव हीरे तुल्य बनाते हैं। ब्रह्मा द्वारा (य)ह ज्ञान दे रहे हैं। तुम समझाए सकती हो, वास्तव में हर एक मनुष्य ब्रह्माकुमार–कुमारी है। सरनेम है। ब्रह्मा से ही उत्पन्न होता है ब्राह्मण धर्म, फिर देवता,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र यह सारा सिजरा बन जाता है। तो तुम त्योहारों पर अच्छी रीत समझाए सकते हो। दीपमाला आती है, यह तो जानते हो अब घर–2 में घोर अंधियारा है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश, बरोबर घोर अंधियारा है। कोई भी आत्मा अपने बाप को नहीं जानती। बाप को जानने से ही सबकी ज्योत जग जाती है। उनको शमा भी कहा जाता है। तो ऐसे–2 मुख्य पर्व पर तुम बहुत अच्छी रीत समझाय सकते हो या तो तुम गवर्मेन्ट को पकड़ो। किसको प्राइज़ आदि देनी (हो)ती है तो बहुतों से सही लेकर, झुण्ड आदि बनाए, गवर्मेन्ट के आगे जाते हैं। तुम बच्चों को तो (खास) आगे बढ़ना है। माताओं को आगे करना है। इसमें पुरुषों को लज्जा न आनी चाहिए। पुरुषों ने तो आधा कल्प बहुत दुख दिया है, (पाप) किया है। बाबा ने समझाया है, स्त्री लज्जावान होती है, पुरुष निर्लज्ज होते हैं। पहले पुरुष नग्न करते हैं। स्त्री कब नहीं होगी। तो पुरुष ही नर्क का द्वार खोलते हैं। द्रौपदी ने भी पुकारा है कि मुझे नग्न होने से बचाओ। दिखाते हैं न, दुशासन चीर उतारते हैं। सन्यासी लोग स्त्री को नर्क का द्वार, सर्पनी कहते हैं; परन्तु ऐसे है नहीं। स्त्री है तो पुरुष भी तो नर्क का द्वार है न। तो बाप समझाते हैं कैसे तुमको जगाना चाहिए। आपस में मिलकर, सही लेकर, फिर समझाओ। तुम हर एक वास्तव में शिव के बच्चे हो। ऐसे नहीं कि सभी शिव हैं। बाप तो एक है। वह है रचता। वही पतितों को पावन बनाने वाला है। एक (मैमोरियम) बनाना चाहिए। मुख्य जो बड़े हैं उनको पकड़ना है। प्राइम–मिनिस्टर और राधाकृष्ण दोनों अच्छे रिलीजियस माइंडेड हैं। मुज़हबी पागलपना टूमच न है। कोई के मरने बाद

किसी की करके महिमा करते हैं– फलाना गीता आदि पढ़ता था, यह करता था। अंधश्रद्धा तो है ना। अब तुम जानते हो, यह स्वराज्य रुण्य के पानी मिसल है। तुम लिख भी सकते हो, 5000 बरस पहले कौरवों को रुण्य के पानी मिसल राजभाग मिला था। इसमें डरने की कोई बात नहीं। तुम तो मनुष्यों को जगाते हो। मनुष्य समझते हैं, गंगा में स्नान करने से पावन बनते हैं; परन्तु गंगा तो पतित–पावनी नहीं है। पतित–पावन एक ही निराकार है। ज्ञान की वर्षा करने वाला ज्ञान सागर वो है। बाकी यह सब है अंधश्रद्धा। अभी तुम बच्चों को अथॉरिटी मिली है। शास्त्रों में लिखा हुआ है कुमारियों द्वारा ज्ञान बाण मरवाए हैं। अच्छे–2 बच्चे काम कर सकते हैं, भाषण आदि कर सकते हैं। सेना में नम्बरवार तो होते हैं ना। ऐसे भी बुद्धू है जिनमें पूरा ज्ञान न होने कारण कमांडर का भी डिस रिगार्ड करने में देरी नहीं करेंगे। बातचीत करने का भी मैनर्स नहीं। अपन से बड़े को हमेशा आप–2 कहा जाता है; परन्तु अनपढ़े बच्चों को यह भी अक्ल नहीं, आप के बदली तू–2 कर बात करते हैं। कोई–2 स्त्री भी ऐसी होती है जो पति से तू–2 कर बात करती है। पढ़ाई से भी बुद्धि में मैनर्स आते हैं। टीचर्स फिर भी अच्छे होते हैं जो पढ़ाई कर मर्तबा पाने लायक बनाते हैं। क्वालीफिकेशन भी रजिस्टर में लिखते हैं ना। आजकल तो इतने क्वालीफिकेशन वाले हैं नहीं। दुनिया में गंद ही गंद है। गीत में भी सुना ना– क्या हाल है। तुम बच्चे जानते हो, ओहो! भारत हमारा कौन स....। भारत स्वर्ग था। सन्यासी लोग तो कह देते यह सब आपकी कल्पना है। उनको क्या पता स्वर्ग क्या होता है। हाँ, कोई निकल पड़ेंगे जो देख बड़े खुश होंगे। यह (चित्र) बड़ी अच्छी चीज़ है। पाण्डवों के बहुत बड़े–2 बुत बनाए हैं। इतने बड़े कोई थे थोड़े ही। रावण को कितना बड़ा 100 फुट का लम्बा बनाते हैं। दिन–प्रतिदिन लम्बा बनाते जाते हैं। रावण की आयु बड़ी हो गई है। 2500 बरस आकर हुई है। तो तुम दशहरे के दिन पर भी अच्छी रीत समझा सकते हो। यह रावण की राजधानी है। इनको डेविल वर्ल्ड कहा जाता है। अख़बार में भी कोई ने डाला था कि यह राक्षस दुनिया है। अगर कोई बोले, तुम आसुरी राज्य क्यों कहते हो? बोलो, फलाने ने अख़बार में भी राक्षस राज्य कहा है। बाप भी जब आया था तो कहा था यह आसुरी दुनिया है। दैवी राज्य तो सतयुग में होता है। ऐसे–2 आपस में मिलकर राय निकालनी चाहिए। कमेटियाँ जो करते हैं उन्हों के लिए बाबा समझाते हैं। प्रूफ देने लिए सभी की सही ले भेज देना चाहिए। हम सबको निश्चय है। इसमें अंधश्रद्धा की कोई बात ही नहीं। एम–ऑब्जेक्ट क्लीयर है। बाबा ने बाहर बोर्ड पर भी लिखाया है एम–ऑब्जेक्ट। कोई भी स्कूल में अंधश्रद्धा की बात नहीं होती। सतसंग जो भी हैं वहाँ वेद–शास्त्र आदि सब अंधश्रद्धा से सुनते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं निकलता। अब बाप कहते हैं– हे भारतवासियों! तुम बड़े–2 वेद–उपनिषद आदि कबसे पढ़ते आए हो। सतयुग से तो नहीं कहेंगे। वहाँ यह भक्तिमार्ग का अंग है नहीं। इनको भक्ति कल्ट कहा जाता है। आधा कल्प ब्रह्मा की रात भक्तिमार्ग शुरू होता है। भगवान ज़रूर आते हैं तब तो शिव जयन्ती मनाई जाती है, नहीं तो वो निराकार कैसे आया? ज़रूर शरीर का आधार लिया होगा। तुम जानते हो, बाप ब्रह्मा तन का ही आधार लेते हैं। उनको आना ही भारत में है। बाप का जन्म भी भारत में ही है। ब्रह्मा का भी भारत में है। बाबा ने विराट रूप के लिए भी समझाया था। भल मम्मा–बाबा का ही रूप दें। उनका विराट रूप बनाए दो। चित्र तो मम्मा–बाबा के सबके पास हैं। चोटी पर लिख दें– शिवबाबा ब्रह्मा सरस्वती और यह ब्राह्मण धर्म है चोटी। अब प्रैक्टिकल में तुम हो ना। हम ब्राह्मणों के ऊपर शिवबाबा निराकार है। फिर ब्रह्मा का तन दिखाना पड़े। यह सरस्वती और यह ब्राह्मण कुल। फिर देवता कुल, क्षत्रिय कुल। इतने–2 जन्म लेते हैं। बिल्कुल क्लीयर एक्युरेट बन सकता है। ब्रह्मा की रात सो सरस्वती की भी रात, ब्रह्मावंशियों की भी रात। दिन में फिर सब ब्राह्मण सो फिर देवता बनते हैं।

प्वाइंट्स तो बच्चों को बहुत दी जाती हैं। धारणा करनी है। ऐसे नहीं कि एक कान से सुना और बाहर निकले, खलास। जैसे और सतसंगों में कथाएँ आदि सुन चले जाते हैं। यहाँ तो तुमको प्रत्यक्ष फल मिलता है। जानते हो, इस पढ़ाई से हमको मनुष्य से देवता बनना है। वहाँ कुछ एम–ऑब्जेक्ट नहीं। बाप समझाते तो बहुत हैं, कोई विरले निकलते हैं। कोई–2 तो ट्रेटर भी निकल पड़ते। समझाना चाहिए, यह युद्ध का मैदान है। माया बड़ी प्रबल है। कई फेल हो जाते हैं। यह भी ड्रामा का खेल है। सब थोड़े ही विन कर सकते हैं। बच्चे जानते हैं, हम माया रावण से हराए हुए हैं। हार और जीत का यह खेल है। माया ते हारे हार है। तुम्हारी बुद्धि में सब बड़े–2 विद्वान–आचार्य–पंडित आदि कोई काम के नहीं हैं। सब घोखा देते रहते हैं। बड़े–2 धनवान तुम्हारे आगे वर्थ नॉट अपेनी हैं। तुम जानते हो, हम तो बाबा से विश्व के मालिक बनते हैं। यह नशा स्थायी रहना चाहिए। नशा टूटता क्यों है? विश्व के रचयिता बाप से हम पढ़ रहे हैं। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बन रहे हैं। ऐसे थोड़े ही है स्टूडेंट्स पढ़ाई और पढ़ाने वाले को भूल जाते हैं। फिर यहाँ (क्यों) भूलते हैं? घर में जाने से एकदम भूल जाते हैं। यहाँ बहुत निश्चयबुद्धि हो जाते, कितने आँसू बहाते, यहाँ से घर गए फिर कब चिट्ठी नहीं लिखते तो क्या कहेंगे! माया इतना मुर्दा बना देती जो विश्व का मालिक बनाने वाले बाप को कब चिट्ठी भी नहीं लिखते। बाप को बच्चा कितना प्यारा होता है। उनकी चिट्ठी न आए तो बीमार हो जाते। पता नहीं हमारा बच्चा कहाँ मर गया, क्या हुआ। स्त्री को चिंता लग जाती है, पता नहीं पति को क्या हुआ। ज़ारोजार रोती है। यहाँ माया क्या कर देती है। जाते हैं तो फिर कब चिट्ठी दो अक्षर भी नहीं लिखते हैं। अनन्य बच्चे जो पण्डा बन आते वो भी भूल जाते हैं। कम से कम हफ्ते–2 तो चिट्ठी लिखनी चाहिए, तो बाबा समझे बच्चे याद करते हैं। सर्विस समाचार भी लिखते हैं– बाबा, हम आपकी सर्विस में तत्पर हैं। नहीं तो बाबा समझ लेते हैं, माया ने कब्रदाखिल कर दिया है। बुद्धि भी .....विश्व का मालिक..... उनको मास–2 भी याद न करते, पत्र न लिखते। माया कोई–2 को तो बिल्कुल ही मुर्दा बना देते हैं। जीते जी भी चिट्ठी नहीं लिखते। मरने बाद तो बात ही नहीं। बाबा भी चिट्ठी तब लिखेंगे जब वो खुद लिखेंगे। जो बाबा को याद करेंगे वो ही विकर्माजीत, एवरहेल्दी बनेंगे। बाबा का वर्सा तो ज़रूर याद आना चाहिए। खाली शिवबाबा को नहीं। नारायणी नशा भी चढ़ना चाहिए। इस समय तुम बच्चों का याद से मुख मीठा होता है। जानते हो, सृष्टि के राज्य रूपी माखन हमें मिलना है। कृष्ण को मुख में माखन दिखाते हैं ना! अर्थात विश्व का राज्य है। मालिकपने में भी स्टेट्स है ना। जो जितना करेगा वो पावेगा। तुम जानते हो, बाबा हमको पढ़ाते हैं। परमपिता कहा जाता है ना तो पिता से ज़रूर वर्सा मिलता है। मात–पिता चाहिए, तब बच्चे पैदा हो और वर्सा मिले। गाते भी हैं तुम मात–पिता..... तुम्हरी(तुम्हारे) सहज राजयोग सिखलाने से हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। समझाना चाहिए, 3 सेनाएँ तो बरोबर खड़ी हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि तो खलास हुए थे। कौरवों और यादवों की है विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाकी जिनकी प्रीत थी वो भगवान के (साथ) स्वर्ग के मालिक बन गए। हमारा फर्ज है गवर्मेन्ट को इतला करना। यह साधु–संत आदि इन बातों से नहीं जानते। गीता को सारा खण्डन किया हुआ है। तो यह सब बातें क्लीयर मैमोरेंडम बनाय उसकी कापियाँ छपाओ। कोई पान का बीड़ा उठावे हम यह काम करके दिखाते हैं। ऐसी–2 युक्तियाँ मीटिंग में निकालनी हैं तो झट जाग जावेंगे। विद्युत मण्डली में भी बड़े–2 टाइटिल रखाते हैं। है सब ठगी। करप्शन और एडल्ट्रेशन। जो भी बड़े–2 ऑफीसर तुम्हारे साथ मिलते हैं उनसे भी सही ले सकते हो तो खुश हो जावेंगे, यह तो बहुत अच्छा कर्म करते हैं। मेहनत करो। इसमें फुर्सत भी चाहिए, जो फिर संभाल सको। सर्विस बढ़ाने लिए तो बहुत युक्तियाँ हैं; परन्तु बच्चों में कहाँ–2 अहंकार आ जाता है या फैमिलियर्टी में आने से बहुत नुकसान कर देते हैं। ज्ञान का नशा रहना चाहिए। ..... सदैव हर्षितमुख रहना चाहिए। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ॐ